अतिथि संपादक की कलम से..

साहित्य हमारे जीवन को समृद्ध करने और इसे अर्थ देने में एक अनिवार्य भूमिका निभाता है। साहित्य मानव सभ्यता का एक अभिन्न अंग रहा है, जो सदियों से ज्ञान, मनोरंजन और आत्म-प्रतिबिंब प्रदान करता रहा है। यह ज्ञान, मनोरंजन, आत्म-प्रतिबिंब, सामाजिक जागरूकता, भाषा कौशल में सुधार और सांस्कृतिक संरक्षण का एक स्रोत है। इसके विभिन्न रूपों में, साहित्य हमारे जीवन को समृद्ध करता है और हमें दुनिया और स्वयं को समझने में मदद करता है। साहित्य इतिहास, संस्कृति, विज्ञान और मानवीय अनुभव की एक विस्तृत श्रृंखला को शामिल करता है। यह वैज्ञानिक खोजों, सामाजिक मुद्दों और मानवीय प्रकृति की गहन समझ प्रदान करता है। साहित्य हमें अपनी कमियों पर विचार करने, अपनी ताकत की सराहना करने और जीवन के बारे में एक व्यापक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करता है।

प्रोद्योगिकी के समय में साहित्य ने हमारे समय की सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियों और अवसरों को उजागर किया है। यह साहित्य न केवल हमें प्रौद्योगिकी के प्रभावों के बारे में सोचने पर मजबूर करता है, बल्कि यह हमें खुद को, हमारे मूल्यों और हमारे भविष्य के बारे में भी प्रश्न करने के लिए प्रेरित करता है ।आज के युग में, प्रौद्योगिकी हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गई है। यह हमारे सोचने, काम करने और संवाद करने के तरीके को बदल रही है। स्वाभाविक रूप से, यह साहित्य पर भी अपना प्रभाव डाल रही है।

हिंदी साहित्य को समृद्ध करने में भारत के सभी क्षेत्रों की महत्वपूर्ण भुमिकाएं हैं । भारत के पूर्वोत्तर राज्यों से भी अनेक ऐसे प्रभावित लेखक,कवि एवं साहित्यकार हैं, जिन्होंने अपनी सृजन कला को क्षेत्रीय स्तर पर ही सीमित न रखते हुए देश- विदेश के कोने- कोने में अपनी लेखन- प्रतिभा को प्रचार-प्रसार किया है । वर्तमान प्रोद्योगिकी के विकास ने संपूर्ण विश्व को अल्पावधि में ही एक सूत्र में बांधा हैं । पूर्वोत्तर भारत के साहित्यकारों ने हिंदी भाषा एवं साहित्य को समृद्ध करने में विशेष योगदान दिया हैं । पूर्वोत्तर के कुल आठ राज्यों- असम, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, नागालैंड, अरूणाचल प्रदेश, त्रिपुरा और सिक्किम में हिंदी का प्रचार- प्रसार हो रहा है। विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर पाठ्यक्रमों में हिंदी शिक्षण की व्यवस्थाएं होते हुए भी हिंदी भाषा एवं साहित्य पर अनेक शोध- कार्य भी हुए हैं । साथ ही, इन अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में मौलिक एवं अनुदित रूप से साहित्यिक कृतियां भी उपलब्ध हैं । इस अंक में आप पूर्वोत्तर के प्रतिभाशाली लेखकों की रचनाओं व पूर्वोत्तर से रूबरू होते हुए, उनकी भाषा, संस्कृति और जीवन के अनुभवों को जान पाएँगे। इस अंक में आप पूर्वोत्तर के साहित्यिक परिदृश्य से प्रभावित होंगे। हम आशा करते हैं कि यह अंक आपको पूर्वोत्तर के साहित्यिक खजाने से परिचित कराएगा और आपको इस क्षेत्र की सांस्कृतिक समृद्धि की एक झलक दिखाएगा।

लोकप्रिय ई-पत्रिका 'साहित्य रत्न' के पूर्वोत्तर के साहित्यकार विशेषांक में

अतिथि संपादक के रूप में दायित्व निर्वाहते हुए मुझे असीम आनंद की अनुभूति हो रही है । अतः मैं, 'साहित्य रत्न' के संस्थापक एवं प्रधान संपादक सुरजीत मान जलईया सिंहद के प्रति हृदयतल की असीम गहराइयों से आभार प्रकट करना चाहती हूं, जिन्होंने पूर्वोत्तर के वरिष्ठ एवं प्रभावित साहित्यकारों के कलम को साहित्य रत्न' के फलक पर मौलिक विचारों एवं अनुभवों को अंकित करने का सुयोग प्रदान किया । साथ ही, मैं साहित्य रत्न' के संपादक के प्रति भी कृतज्ञ हूं । मैं, पूर्वोत्तर के सम्मानित सभी महानुभाव व्यक्तित्वों के प्रति आभारी हूं तथा सम्मानित माता-पिता, अपने पति एवं नन्हीं बेटी याफियाह् हायात को भी तहे दिल से धन्यवाद ज्ञापन करती हूं ।

मुझे विश्वास है कि प्रस्तुत ई-पत्रिका का छात्रों, शोधार्थियों तथा साहित्य प्रेमियों द्वारा भरपूर स्वागत होगा ।

डॉ. अनुजा बेगम

अतिथि संकाय

भारतीय भाषा (हिंदी)

टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान

गुवाहाटी परिसर,असम